Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 17/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -

फ्रॉयड के सिद्धान्त की मान्यताएँ **(Assumptions of Freud's Theory)**

मनोदैहिक सिद्धान्त मानव प्रकृति या स्वभाव के विषय में कुछ मूल पूर्व कल्पनाओं पर आधारित है जिनको जानकर इनके सिद्धान्त को समझने में सहायता मिलती है।

ये पूर्व कल्पनाएँ निम्नलिखित है-

(1) इनके अनुसार मानव व्यवहार बाह्य कारकों द्वारा निर्धारित होता है और ऐसे व्यवहार अविवेकपूर्ण, अपरिवर्तनशील एवं समस्थितिक होते हैं।

(2) मानव प्रकृति या स्वभाव पूर्णता, शारीरिक गठन एवं अप्रलक्षता जैसी पूर्व कल्पनाओं से हल्के-फुल्के तरीके से प्रभावित होती है।

(3) इनके अनुसार मानव प्रकृति आत्मनिष्ठ की पूर्व कल्पना से बहुत कम प्रभावित होती है।

(4) इनके सिद्धान्त में मानव प्रकृति की निराशावादी एवं निश्चयवादी छवि को प्रधानता दी गई है।

इन्हीं पूर्व कल्पनाओं के आधार पर मनोवैश्लेषिक सिद्धान्त की व्याख्या निम्नलिखित तीन मुख्य भागों में बांट कर की जाती है-

(1) व्यक्तित्व की संरचना

(2) व्यक्तित्व की गतिकी

(3) व्यक्तित्व का विकास

व्यक्तित्व की संरचना **(Structure of Personality)**

व्यक्तित्व की संरचना का वर्णन करने के लिए फ्रायड ने निम्नलिखित दो मॉडलों का निर्माण किया है-

(1) आकारात्मक मॉडल

(2) गत्यात्यक मॉडल या संरचनात्मक मॉडल

(1)आकारत्मक मॉडल **(Topographical Model**)-मन के आकारात्मक मॉडल से आशय उन पहलुओं या पक्षों से होता है जहाँ संघर्षमय परिस्थिति की गत्यात्मकता उत्पन्न होती है। मन का यह पहलू वास्तव में व्यक्तित्व के

गत्यात्मक शक्तियों के मध्य होने वाले संघर्षो का एक कार्यस्थल होता है। फ्रायड ने इसे तीन स्तरों, चेतन, अर्द्धचेतन एवं अचेतन में बाँटा है। फ्रॉयड ने मन की तुलना समुद्र में तैरते हुए वर्फ के टुकड़े से की है। जिसका भाग पानी के अन्दर व 1 भाग बाहर रहता है पानी के बाहर वाला भाग 10 चेतन, अदर वाला अचेतन व पानी की ऊपरी सतह से स्पर्श करता हुआ भाग अर्धचेतन कहलाता है। इसे मन का स्थलाकृति पक्ष (Topographical Aspects of the Mind) भी कहते है। इनका कहना था व्यक्ति की मानसिक क्रियाएँ इन्हीं स्तरों के अनुरूप ही होती हैं।

(1)चेतन (Conscious)- चेतन से तात्पर्य मन के उस भाग से होता है जिसमें वे सभी अनूभूतियाँ या अनुभव, इच्छाएँ, प्रेरणाएँ एवं संवेदनाएं होती है जिनका सम्बन्ध वर्तमान से होता है। चेतन का अर्थ ज्ञान से होता है जैसे यदि कोई व्यक्ति पढ़ रहा है तो उसमें पढ़ने की चेतना है। जिन क्रियाओं के प्रति व्यक्ति जागरुक (जाग्रत अवस्था में) होता है, वे चेतन स्तर पर होती हैं। चेतन स्तर पर सामाजिक रूप में स्वीकृत अनुभूतियों प्रबल होती है। चेतन मन का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। चेतना में निरंतरता का गुण पाया जाता है अर्थात् इसमें परिवर्तन होते रहते हैं किन्तु यह गायब नहीं होता है।

(ii) अर्द्धचेतन (Semi-conscious)- यह चेतन एवं अचेतन के मध्य की स्थिति है। इस अवस्था में व्यक्ति न तो पूरी तरह जाग्रत अर्थात् चेतन होता है और न ही पूरी तरह से अचेतन। अतः इस अवस्था में व्यक्ति अर्द्धचेतना में होता है। इसमें वे इच्छाएं, विचार, भाव आदि होते हैं जो हमारे वर्तमान चेतन या अनुभव में नहीं होते, लेकिन प्रयास करने परं वे हमारे चेतन मन में आ जाते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि यह पानी की ऊपरी सतह को स्पर्श करता हुआ भाग होता है। यदि वह कुछ भूल जाता है तो उन्हें थोड़ा याद करने पर वे याद आ जाती है। जैसे किसी परिचित का नाम भूलना आदि। अर्द्धचेतन, चेतन एवं अचेतन के बीच पुल का कार्य करता है। इस भाग में व्यक्ति की वो यादें रहती हैं जिन्हें याद करने के लिए उसे प्रयास करना पड़ता है। इस प्रकार वह स्मृति चेतन मन का एक अच्छा उदाहरण है।

(iii) अचेतन (Unconscious) अचेतन शब्द, चेतन के ठीक विपरीत है अर्थात् जो चेतना से परे हो, वह अचेतन है। हमारे कुछ अनुभव इस प्रकार के होते हैं जो न तो हमारे चेतन में होते हैं और न ही अर्द्धचेतन में। ऐसे अनुभव अचेतन मन में होते हैं। फ्रायड के अनुसार पर अचेतन अनुभूतियों एवं विचारों का प्रभाव हमारे व्यवहार पर चेतन एवं अर्द्धचेतन की अनुभूतियों एवं विचारों से अधिक होता है। यह व्यक्ति का वह भाग होता है, जिसका 9/10 भाग पानी में डूबा रहता है इन्हें व्यक्ति याद करके भी चेतन स्तर में लाना चाहे तो नहीं ला सकता क्योंकि ये विचार व इच्छाएँ उसकी दमित इच्छाएँ होती हैं। यह अचेतन मन में निष्क्रिय न होकर सक्रिय रूप में रहती हैं। फ्रॉयड महोदय का कहना है, कि अचेतन की क्रियाएँ दिखाई नहीं पड़ती हैं लेकिन कभी-कभी व्यक्तित्व को नष्ट कर देती हैं। अचेतन में असामाजिक एवं अनैतिक इच्छाएँ होती हैं, जिन्हें चेतन में लाया नहीं जा सकता है।

फ्रायडियन मनोविश्लेषण में अचेतन एक महत्त्वपूर्ण संप्रत्यय है जिसे चेतन तथा अर्द्धचेतन से भी बड़ा बताया गया है। फ्रायड चेतन एवं अर्द्धचेतन की तुलना में अचेतन को कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहते है कि मानव व्यवहार अचेतन अनुभूतियों इच्छाओं एवं प्रेरणाओं से ही सर्वाधिक प्रमाणित होता है। फ्रायड की मान्यतानुसार अचेतन में जो भी इच्छा, विचार, अनुभव एवं प्रेरणाएं होती हैं उनका स्वरूप कामुक, अनैतिक, घृणित एवं आसामाजिक होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि नैतिक दबाव या सामाजिक दबाव आदि के कारण व्यक्ति अपनी कुछ इच्छाओं की पूर्ति चेतन में नहीं कर पाता है। अतः ऐसी इच्छाएं चेतन स्तर पर निष्क्रिय होकर अचेतन मन में दमित हो जाती है एवं मानवीय व्यवहार को निरन्तर प्रभावित करती रहती है। इसी के परिणामस्वरूप व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के मनोरोगों का सामना करना पड़ता है।